भोपाल-म.प्र.। गणतंत्र दिवस के अवसर पर राज्यपाल मंगू भाई पटेल को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी,ज़ोनल इंचार्ज,भोपाल ज़ोन,ब्रह्माकुमारीज़। साथ हैं ब्र.कु. जया बहन, ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. दीपेन भाई।

नगांव-असम। बिहु उत्सव के उपलक्ष्य में रूपक शर्मा,विधायक,नगांव सदर को प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन। साथ हैं ब्र.कु. सेवाली बहन व ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई।

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के से.7 स्थित सेवाकेन्द्र के पीस ऑडिटोरियम में रशिया स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कार्यक्रम को सम्बोधित किया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। कार्यक्रम में डिवाइन ग्रुप के बच्चों द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

फर्रुखाबाद-नेहरू रोड कन्नौज(उ.प्र.)। 'प्रभु प्राप्ति का सहज मार्ग : राजयोग' कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए श्री श्री 108 स्वामी परसुराम। इस मौके पर स्वामी सोबरन सिंह, स्वामी मंगल सिंह, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. रमा बहन आदि मौजूद रहे।

मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 55वें अव्यक्त स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सब इंस्पेक्टर संजय कुमार, नगर सभापति अरुण केसरी, जन सुराज के नगर अध्यक्ष रवि केसरी, औघड़दानी मंदिर न्यास बोर्ड के अध्यक्ष विनोद व्यास, वार्ड पार्षद मुन्ना जी, वार्ड पार्षद रघुवीर जी, वार्ड पार्षद रंजीत जी, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. इन्दू बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। बीएसएफ एसटीसी कैंपस में 750 रिक्रूट कॉन्स्टेबल्स को 'तनाव मुक्त जीवन के सूत्र' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् कमांडेंट ललित हुरमाडे को ईश्वरीय साहित्य व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. प्रो. ई.वी. गिरीश एवं ब्र.कु. सुजाता बहन।

ये विधि सन्तुष्ट बना सकती

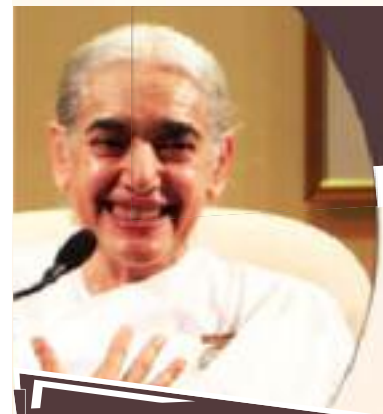

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

आप सोचो कि कोई भी मधुबन में आते हैं जब चक्कर लगाते हैं तो क्या देखते हैं? सब तरफ हर्षित चेहरे। तो इस कारण से ही वो ये कहने लगते हैं कि यहाँ तो बिल्कुल स्वर्ग है। मधुबन को तो वैसे भी हम शुरू में कहते थे स्वर्ग आश्रम। आजकल मैं ये कम सुनती हूँ परंतु बिल्कुल जो भी कोई नये आते हैं या पुराने भी परंतु उन्हों को हर तरफ हर्षित चेहरे नज़र आते हैं। तो वो कहने लगते हैं कि स्वर्ग तो यहाँ ही है। और फिर साथ-साथ आश्रम की पवित्रता की शक्ति जो है वो भी उन्हें महसूस होती। तो बाबा की प्रत्यक्षता पहले तो जो यहाँ आते हैं उन्हों के सामने हो। और जो भी बाबा के बच्चे जहाँ पर भी रहते हैं, जहाँ पर भी सेवा के लिए जाते हैं, जहाँ-जहाँ वो अपनी फरिश्ता स्थिति, संतुष्टता, हर्षितमुखता की स्थिति बनाकर रखते तो अवश्य बाहर वाले लोगों को भी लगता है कि ये कोई अलग ही व्यक्ति है। इन्हों के पास कोई विशेष खज़ाना है।

तो प्रश्न है कि हम कैसे ऐसे अपने जीवन को बनायें? तो पहली बात जो बाबा ने कहा कि संतुष्टमणि बनकर रहें। और ये तो प्रैक्टिकल देखा है कि कोई आत्मा के पास थोड़ा भी होगा तो भी कहेंगे कि सबकुछ है और कुछ नहीं चाहिए। आत्मा संतुष्ट है। और किसी के पास ज़्यादा भी होगा तो भी कहेंगे और चाहिए और चाहिए। तो संसार की हालत किस तरफ है? जितना आये कम ही पड़ता। समझते कि और भी चाहिए, और भी चाहिए। कभी लोभ के वश, कभी मोह के वश, कभी अहंकार के वश, लोभ में मुझे चाहिए, और अहंकार वश कि मेरे पास होगा सबकुछ तो सब मुझे देखकर मेरी वाह-वाह करेंगे। या मोह वश मुझे तो चाहिए अपने लिए परंतु अपने पोत्रे-धोत्रे सबके लिए चाहिए। तो ये सब जो बातें आती हैं यदि सचमुच हम आत्म स्मृति में हैं, बाबा की याद में हैं तो जो कुछ बाबा के पास खज़ाना है और बाबा तो सागर है। सागर ने बिल्कुल फाटक खोल कर रखा है और कहा है जितना आप लेने चाहो, जितना आप अपने में भरना चाहो, बाबा कुछ लिमिट नहीं रखते। बाबा बेहद का है और बेहद की छुट्टी देते हैं कि जितना जिसको चाहिए वो ले सकते हैं।

जितना-जितना हम बाबा से लेते जायें और साथ-साथ देते जायें उससे भी हमें जो दुआयें मिलती जाती हैं, हमारी खुशी बढ़ती जाती है, हमारे अन्दर शक्ति बढ़ती जाती है। हम नाम

सचमुच हम आत्म स्मृति में हैं, बाबा की याद में हैं तो जो कुछ बाबा के पास खज़ाना है और बाबा तो सागर है। सागर ने बिल्कुल फाटक खोल कर रखा है और कहा है जितना आप लेने चाहो, जितना आप अपने में भरना चाहो, बाबा कुछ लिमिट नहीं रखते।

लेते हैं हमने बाबा के लिए परंतु वास्तविकता तो ये है कि वो भावनायें रखते हैं कि अनेक आत्मायें बाबा के नज़दीक आयें। परंतु वास्तविकता तो हमें बहुत-बहुत प्राप्ति हो जाती। इतना थोड़ा-सा भी बाबा के लिए करो तो शक्ति और खुशी किसे मिलती? बाबा तो सागर है, भरपूर है। परंतु शक्ति और खुशी हमें मिलती। तो हम सोचते हैं कि क्यों न और भी करें और भी करें। तो इस तरह से ऊपर से लेते जाओ और अन्य आत्माओं को देते जाओ।

दादी जानकी एक वारी कहती थीं कि मैं बहुत मनहूस हूँ। हम लोगों को आश्चर्य लगा क्योंकि दादी तो बहुत फ्राक दिल रही सदा ही। जब भंडारे में थोड़ा ही था तो वो दान करती थीं। अपना भोजन न करके बच्चों को खिला देती थीं। तो मुझे तो बचपन से अनुभव है दादी का, दादी तो बहुत बड़ी दिल वाली हैं। मैंने पूछा दादी आपका मतलब क्या? तो कहती जो बाबा ने मुझे दिया है, जिस आधार से मैं चल रही हूँ तो वो मैं अपने पास जमा रखती हूँ, उसको कभी वेस्ट नहीं करती हूँ। परंतु मैं बाबा को कहती हूँ कि जब और सामने आते हैं उन्हों को क्या देवें? बाबा कहता कि मैं देता जाऊंगा और तुम देती जाओ। आप लेती भी जाओ और देती भी जाओ। परंतु अपना जो शक्ति जमा की है, कोई भी बात में खर्च नहीं करो। वेस्ट नहीं करो। तो इसमें दादी कहती थीं कि मैं मनहूस हूँ। तो हम तो हँसते थे कि दादी का स्ट्रॉन्ग शब्द है परंतु भाव जब दादी एक्सप्लेन करती थीं हम समझ जाते थे। कहने का मतलब बाबा इतना दे रहा लेते जाओ और चैनल बनकर औरों तक पहुंचाते जाओ।

उस बीच में खुद को उसका परसेन्टेज फायदा हो जाता। तो संतुष्ट रहें तो बाबा से जितना हमें मिला है उतना हम उसको बाबा को थैंक्स देते रहें हर रोज़, सुबह-शाम बाबा को थैंक्स देते रहो क्यों? क्योंकि जितना हम बाबा को थैंक्स देते जाते हैं बाबा और भी आत्मा को भरपूर करता जाता। आप बच्चे को कुछ दो और वो एप्रीशिएट न करे तो आप नैक्स्ट टाइम सोचेंगे कि अभी उसको देवें या न देवें। परंतु बच्चे को बहुत खुशी हो, बहुत एप्रीसिएशन हो तो माँ-बाप भी कहेंगे कि देते जाओ, देते जाओ, बच्चा भी खुश होता है ना, देते जाओ। तो हमें जब बाबा दे रहा है और हमारी बुद्धि किसी और में फंसी हुई है कि ये चाहिए, वो चाहिए, चाहे कोई मनुष्य चाहिए, चाहे कोई और स्थूल चीज़ चाहिए तो उसमें फिर बाबा के साथ सीधी लाइन नहीं है, बाबा दे नहीं पाता। बाबा देना भी चाहे तो हम ले नहीं पाते। मतलब पहले तो बुद्धि की लाइन इतना क्लीन और क्लीयर रखें जो बाबा हमें दें सकें और हम अपने में समा सकें। फिर बिल्कुल निर्संकल्प होकर अन्य आत्माओं को बाबा का दिया हुआ खज़ाना हम देते रहें।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। नरसरावपेट में ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित 'भाग्य विधाता भवन' का ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी ने उद्घाटन किया। इस मौके पर एमएलए अंजनयेलु,चेयरमैन,शिव शक्ति ग्रुप्स व अन्य गणमान्य लोगों सहित ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. शान्ता दीदी व लगभग 1200 ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

फर्रुखाबाद-जटवाड़ा जदीद(उ.प्र.)। अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में कला एवं साहित्य की अखिल भारतीय संस्था संस्कार भारती द्वारा नगर में आयोजित 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' यात्रा में शामिल होने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष आमंत्रित किया गया एवं ब्र.कु. ज्योति बहन,इटावा, ब्र.कु. पूनम बहन, ब्र.कु. सुधा बहन, ब्र.कु. सतोष बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. सतेंद्र भाई आदि का सम्मान किया गया। यात्रा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सजाई गई श्री राम दरबार, श्री लक्ष्मी नारायण, श्री राधा-श्री कृष्ण आदि की सुंदर झाँकी के द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश दिया गया। माउण्ट आबू से ब्र.कु. शोभा बहन ने विडियो कॉलिंग के द्वारा कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

माउण्ट आबू। गणतंत्र दिवस पर श्रेष्ठ पत्रकारिता के लिए ब्र.कु. अवतार भाई को सम्मानित करते हुए उपखंड अधिकारी गौरव रविन्द्र सालुंखे।